[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : **3080** **E**

Unique Paper Code : 62051214

Name of the Paper : आधुनिक भारतीय भाषा : हिंदी भाषा और साहित्य (B)

Name of the Course : बी.ए. (प्रोग्राम) **Functional Hindi**

Semester : II

समय: 3 घंटे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश :

इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं तीन अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(क) साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय, 10
सार सार को गहि रहै, थोथा देई उड़ाय।।

अथवा

कृपासिंधु बोले मुसुकाई।सोई करु जेहिं तव नाव न जाई।।
बेगि आनु जल पाय पखारू।होत बिलंबु उतारहि पारू।।

(ख) बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाइ। 10
सौंह करैं भौंहनु हँसै दैन कहै नटि जाइ ।।

अथवा

इंद्र जिम जंभ पर बाड़व ज्यौं अंभ पर,
रावन सदंभ पर रघुकुल राज है।
पौन वारिवाह पर,संभु रतिनाह पर,
ज्यौं सहसबाहु पर राम द्विजराज है।
दावा द्रुमदंड पर,चीता मृगझुंड पर,
भूषण बितुंड पर जैसे मृगराज है ।

P.T.O.

तेज तम अंस पर, कान्ह जिम कंस पर,
यौं म्लेच्छ बंस पर सेर सिवराज है।।

(ग) सुधा-धार यह नीरस दिल की 10
मस्ती मगन तपस्वी की।
जीवन ज्योति नष्ट नयनों की
सच्ची लगन मनस्वी की।।

अथवा

काट अंध-उर के बंधन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे!

2. कबीर का साहित्यिक परिचय दीजिए। 10

अथवा

तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के केवट-प्रसंग के आधार पर केवट का चरित्र-चित्रण कीजिए।

3. बिहारी की काव्यगत विशेषताएं लिखिए। 10

अथवा

भूषण का साहित्यिक परिचय लिखिए।

4. 'बालिका का परिचय' कविता की मूल संवेदना पर विचार कीजिए। 10

अथवा

'वर दे वीणावादिनी वर दे' कविता की काव्य-भाषा पर प्रकाश डालिए।

5. (क) निम्नलिखित में से किसी एक पर टिप्पणी लिखिए: 5
(i) हिंदी का उद्भव
(ii) मध्यकालीन हिंदी

(ख) किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए: 5+5
(i) सगुण भक्ति काव्य
(ii) रीतिमुक्त काव्य
(iii) द्विवेदीयुगीन कविता

(500)

[This question paper contains 4 printed pages.] (2)

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2068 **F**

Unique Paper Code : 2055201002

Name of the Paper : हिंदी भाषा और साहित्य (ब) (B)

Type of the Paper : GE

Name of the Course : **बी.ए. (प्रोग्राम) हिंदी**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1 सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिये :

(i) सतगुरु हम सूं रीझि करि, एक कह्या प्रसंग ।
बरस्या बादल प्रेम का, भीजी गया सब अंग ।।

P.T.O.

अथवा

कृपासिंधु बोले मुसुकाई। सोइ करुजेहिं तव नाव न जाई।

बेगि आनु जल पाय पखारू। होत बिलंबु उतारहि पारू।।

(ii) संभलो कि सुयोग न चला जाए

कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला

समझो न जग को निरा सपना

पथ आप प्रशस्त करो अपना

अखिलेश्वर है अवलंबन को

नर हो न निराश करो मन को ।

अथवा

धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने

मैके में आयी बेटी की तरह मगन है

फूली सरसों की छाती से लिपट गयी है

जैसे दो हमजोली सखियाँ गले मिली हैं

(iii) यह मेरी गोदी की शोभा, सुख सोहाग की है लाली

शाही शान भिखारिन की है, मनोकामना मतवाली ।

दीपशिखा है अँधेरे की, घनी घटा की उजियाली

उषा है यह काल भृंग की, है पतझर की हरियाली।

अथवा

देखते देखा मुझे तो एक बार

उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार

देखकर कोई नहीं,

देखा मुझे उस दृष्टि से

जो मार खा रोयी नहीं

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये । (12×3=36)

(i) हिंदी भाषा पर एक संक्षिप्त लेख लिखिए।

अथवा

निर्गुण भक्तिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का विवेचन कीजिए।

(ii) कबीर की साखियों के आधार पर गुरु का महत्व स्पष्ट कीजिये।

अथवा

'केवट प्रसंग' का प्रतिपाद्य लिखिए ।

(iii) 'नर हो न निराश करो मन को' कविता में निहित संदेश को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'धूप' कविता में चित्रित ग्राम्य जीवन को स्पष्ट कीजिये ।

(iv) 'बालिका का परिचय' कविता का मूल भाव लिखिए।

अथवा

'वह तोड़ती पत्थर' कविता में चित्रित श्रम - चेतना को स्पष्ट कीजिये।

3. संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए (कोई तीन) (6×3=18)

(क) बिहारी हिंदी

(ख) सूफी काव्य

(ग) आदिकाल की काव्य प्रवृतियां

(घ) भारतेन्दुयुगीन काव्य

(ङ) केदारनाथ अग्रवाल

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2067 **F**

Unique Paper Code : 2055201001

Name of the Paper : Hindi Bhasha Aur Sahitya (A)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi : GE**

Semester : II

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) दरसन दीजै राम, दरसन दीजै। दरसन दीजे बिलंब न कीजै ।टेक।।
दरसन तोरा जीवन मोरा। बिन दरसन क्यों जीवे चकोरा।
साधो सतगुरु सब जग चेला। अबके बिछुरे मिलन दुहेला ।।2।।
तन धन जोबन झूठी आसा। सत सत भाषै जन रैदासा ।।

P.T.O.

अथवा

गरुड़ को दावा जैसे नाग के समूह पर दावा नागजूह पर सिंहसिरताज को।

दावा पुरहूत को पहारन के कुल पर दावा सबै पच्छिन के गोल पर बाज को।

भूषन अखंड नवखंड महिमंडल में तम पर दावा रबिकिरनसमाज को।

पूरब पछाँह देस दच्छिन तें उत्तर लौं जहाँ पातसाही तहाँ दावा सिवराज को॥

(ख) जोग - जुगति सिखए सबै मनौ महामुनि मैन।
चाहत पिय अद्वैतता काननु सेवत नैन॥
कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत हैं नैननु हीं सब बात॥

अथवा

गोदी के बरसों को धीरे-धीरे भूल चली हो रानी,
बचपन की मधुरीली कूकों के प्रतिकूल चली हो रानी,
छोड़ जाह्नवी कूल, नेहधारा के कूल चली चली हो रानी,
मैंने झूला बाँधा है, अपने घर झूल चली हो रानी,

(ग) हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयं प्रभा समुज्जवला स्वतंत्रता पुकारती-
अमर्त्य वीरपुत्र हो दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है- बढ़े चलो-बढ़े चलो!
असंख्य कीर्ति - रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह - सी!
सपूत मातृभूमि के रुको न शूर साहसी!
अराति सैन्य सिंधु में- सुबाड़वाग्नि से जलो!
प्रवीर हो जय बनो - बढ़े चलो बढ़े चलो!

अथवा

ऋतु बसन्त का सुप्रभात था
मन्द मन्द था अनिल बह रहा
बालारुण का मृदु किरणें थीं
अगल-बगल स्वर्णी शिखर थे
एक-दूसरे से विरहित हो
अलग-अलग रहकर ही जिनको
सारी रात बितानी होती (8×3=24)

2. हिंदी भाषा के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

राजभाषा और संपर्क भाषा के रुप में हिन्दी का परिचय दीजिए।

3. आदिकाल की प्रवृत्तियों का विश्लेषण कीजिए। (12)

अथवा

द्विवेदीयुगीन साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

4. रैदास की कविता में भक्ति और ज्ञान के स्वरुप की विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

भूषण का युद्ध वर्णन बड़ा ही सजीव और स्वाभाविक है, इस कथन के आधार पर भूषण की कविता विशेषताएं लिखिए।

5. जयशंकर प्रसाद की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना के स्वर को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

'बेटी की विदाई' कविता का प्रतिपादय लिखिए।

6. निम्नलिखित में से **किन्हीं तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (6×3=18)

(i) रीतिकालीन कविता (ii) छायावाद

(iii) बिहारी (iv) राष्ट्रभाषा

(v) नागार्जुन का साहित्यिक परिचय (vi) समकालीन कविता

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2066 **F**

Unique Paper Code : 2055091003

Name of the Paper : हिन्दी भाषा और साहित्य का उद्भव और विकास (GE) – C

Name of the Course : **B.Com. (Programme)**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिये :- (12×12=24)

   (i) हिन्दी भाषा का अर्थ बताते हुए उसके स्वरूप पर विचार कीजिए।

   (ii) ब्रजभाषा का सामान्य परिचय दीजिए।

P.T.O.

(iii) निर्गुण भक्तिकाव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।

(iv) प्रगतिवाद की सामान्य विशेषताएँ बताइए।

2. पाठ्यक्रम में संकलित कबीर की साखियों का सार अपने शब्दों में लिखिए। (12)

अथवा

सूरदास के काव्य कला पर प्रकाश डालिए।

3. बिहारी के काव्य सौंदर्य का परिचय दीजिए। (12)

अथवा

घनानंद के काव्य में निहित प्रेम-व्यंजना पर विचार कीजिए।

4. 'पुष्प की अभिलाषा' कविता के महत्व पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

"रोटी और संसद" कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (10×3=30)

(क) गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागू पांय।
बलिहारी गुरु आपने जिन गोविंद दियों बताय।।
पाहन पूजे हरि मिले, तो मै पूजों पहार।
याते ये चक्की भली, पीसि खाय संसार।।

अथवा

उधो, मन न भए दस बीस।
एक हुतो सौ गयौ स्याम संग, को अवराधे ईस।।
सिथिल भई सबहीं माधौ बिनु जथा देह बिनु सीस।
स्वासा अटकिरही आसा लगि, जीवहिं कोटि बरीस।।
तुम तो सखा स्यामसुन्दर के, सकल जोग के ईस।
सूरदास, रसिकन की बतिया पुरवों मन जगदीस।।

(ख) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ
जा तन की झाई परे, स्यामु हरित दुति होई।।
कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैननु ही सब बात।।

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप, नयो नयो लागत ज्यों ज्यों निहारिये।
त्यों इन आँखिन बानि अनोखी, अधानि कहूँ नहिं आनि तिहारिये॥
एक ही जीव हुतौ सु तो वार्यौ, सुजान, संकोच औ सोच सहारिये।
रोकी रहे न, दहै घनआनंद बावरी रीझि के हाथन हारिये॥

(ग) चाह नहीं मैं सुरबाला के, गहनों में गूंथा जाऊँ।
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध, प्यारी को ललचाऊँ।
चाह नहीं सम्राटों के शव पर, हे हरि डाला जाऊ।
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक

अथवा

एक आदमी रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ -
यह तीसरा आदमी कौन है?
मेरे देश की संसद मौन है।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2064 **F**

Unique Paper Code : 2055091001

Name of the Paper : Hindi Bhasha aur Sahitya Ka Udbhav aur Vikas (A)

Name of the Course : **GE : Hindi A**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (10,10)

   (क) हिंदी भाषा का सामान्य परिचय

   (ख) पहाड़ी हिंदी की प्रमुख बोलियाँ

P.T.O.

(ग) खड़ी बोली का क्षेत्र

(घ) पूर्वी हिंदी

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (10,10)

(क) सिद्ध साहित्य

(ख) सूफी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

(ग) भारतेन्दु युग

(घ) प्रगतिवाद

3. कबीर की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'बिहारी का काव्य भक्ति, नीति और शृंगार का समन्वय है।' इस कथन पर विचार कीजिए।

4. नागार्जुन का साहित्यिक परिचय लिखिए। (15)

अथवा

'हिमाद्रि तुंग शृंग' से कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

5. निम्नलिखित काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10,10)

(क) कबीर गुर गरवा मिल्या, रलि गया आटै लूँण।

जाति पाति कुल सब मिटै, नाव धरौगे कौंण।

अथवा

हरि म्हारा जीवन प्राण आधार।

और आसिरो णा म्हारा थें विण, तीनूँ लोक मँझार।

थें विण म्हारे जग णा सुहावाँ, निरख्या सब संसार।

मीराँ रे प्रभु दासी रावली, लीज्यो णेक निहार।

(ख) उनके अलौकिक दर्शनों से दूर होता पाप था,

अति पुण्य मिलता था तथा मिटता हृदय का ताप था।

उपदेश उनके शांतिकारक थे निवारक शोक के

सब लोक उनका भक्त था, वे थे हितैषी लोक के।

अथवा

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास

कई दिनों तक कानी कुतिया, सोई उसके पास

कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त

कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

(2000)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1534 **F**

Unique Paper Code : 2051001001

Name of the Paper : Hindi Bhasha : Sampreshan Aur Sanchaar (Hindi-A)

Name of the Course : **Common Prog. Group**

Type of the paper : AEC

Semester : II

Duration : 2 Hours Maximum Marks : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. विभिन्न विद्वानों के मतों का उल्लेख करते हुए संप्रेषण की अवधारणा स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

संप्रेषण और संचार के आपसी संबंध की समीक्षा कीजिए।

2. संप्रेषण प्रक्रिया के विभिन्न तत्वों का वर्णन कीजिए। (12)

P.T.O.

अथवा

संप्रेषण का अर्थ बताते हुए इसके उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

3. अपने क्षेत्र में महिलाओं में जागरूकता अभियान चलाते हुए 'घरेलू हिंसा' विषय पर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए। (12)

अथवा

संपादकीय का अभिप्राय बताते हुए 'बालश्रम : एक अभिशाप' विषय पर संपादकीय लिखिए।

4. संवाद लेखन का अर्थ स्पष्ट करते हुए संवाद लेखन की प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

ब्लॉग लेखन क्या है? इसके महत्त्व को स्पष्ट करते हुए 'डिजिटल इंडिया' पर एक ब्लॉग लिखिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (6×2)

(क) संप्रेषण के आयाम

(ख) प्रतिपुष्टि (फीडबैक)

(ग) डायरी लेखन

(घ) मानव विकास और मानव मूल्य (अनुच्छेद लेखन)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4406 E

Unique Paper Code : 52051223

Name of the Paper : Hindi C

Name of the Course : **B.Com. (Prog.) Hindi**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए :

   (क) हिन्दी भाषा का विकास

   (ख) अवधी का परिचय

   (ग) आदिकाल की विशेषताएं

P.T.O.

(घ) राम काव्य की प्रवृत्तियाँ

(ङ) प्रगतिवाद

(5×3=15)

2. कबीर की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

सूरदास की साहित्यिक विशेषताएं बताइए। (10)

3. बिहारी अथवा घनानंद का साहित्यिक परिचय लिखिए। (10)

4. 'पुष्प की अभिलाषा' कविता का सार लिखिए।

अथवा

'रोटी और संसद' कविता में कवि का मूल संदेश स्पष्ट कीजिए। (10)

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर,
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर ।।

अथवा

मुख दधि पोछि बुद्धि इक कीन्हीं दोना पीठि दुरायो।
डरि साटि मुंसुकाई जसोदा स्यामहिं कंठ लगायो।
बाल बिनोद मोद मन मोहयो भक्ति प्रताप दिखायो।
सूरदास जनुमति को यह सुख, सिव बिरंचि नहिं पायो ।।

(10)

(ख) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैननु ही सौ बात ।।

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप, नयो नयो लागत ज्यों ज्यों निहारिये।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी, अघानि कहूँ नहिं आनि तिहारिये ।।
एक ही जीव हुतौ सु तौ वारयौ, सुजान, सकोच औ सोच सहारिये।
रोकी रहै न, दहै घन आनंद बावरी रीझि के हाथनि हारिये ।।

(10)

(ग) मुझे तोड़ लेना वनमाली !
उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जावें वीर अनेक ।।

अथवा

एक आदमी

रोटी बेलता है

एक आदमी रोटी खाता है

एक तीसरा आदमी भी है

जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है

वह सिर्फ रोटी से खेलता है। (10)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1468 **F**

Unique Paper Code : 2052201202

Name of the Paper : हिंदी का मौखिक साहित्य और उसकी परंपरा

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – DSC (A OR B)**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (15×4=60)

1. मौखिक साहित्य से आप क्या समझते हैं। मौखिक और लिखित साहित्य के अंत: संबंध पर प्रकाश डालिए।

अथवा

लोक साहित्य का अर्थ बताते हुए इसके विविध रूपों का उल्लेख कीजिए।

2. लोकगीतों की भारतीय परम्परा का वर्णन करते हुए इसकी प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए।

अथवा

विवाह लोक गीत का सोदाहरण परिचय दीजिए।

3. लोकगाथाओं का सामान्य परिचय दीजिए। लोकगाथा लोरिक का विश्लेषण कीजिए।

अथवा

लोककथा का सामान्य परिचय देते हुए, राजस्थानी लोकसभा का सार बताइए।

4. लोक नाट्य 'नौटंकी' की विशेषताएँ बताइए।

अथवा

लोक नाट्य का सामान्य परिचय देते हुए रामलीला के स्वरूप पर विचार कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8×2=16)

(क) सींका की बीनी डेलरिया हो, सीला बीने जाँव
सासू की बीनी डेलरिया हो।
यहि रे डेलरिया माँ भरि ले चंदनिया। सीला
यहि रे डेलरिया माँ सूरुज किरचिया। सीला
सीला के बीन चुन भरूँ रे बखरिया,
सइयाँ की बनी मैं दुलरिया।
सींका की बीनी डेलरिया, हो सीला बीने जाँव।

अथवा

मेंहदी तो बीवण धण गई छोटा देवर साथ,
.... मेंहदी रंग भरी जी राज।
मन्ने तो बोइ एक क्यारी देवर नै बोया सारा खेत।
मैंने निनाणी एक क्यारी देवर नै निमाणा सारा खेत।
मंहदी काटण मैं गई छोटा देवर ने काट्या सारा खेत।
मंहदी डोवण मैं गई छोटा देवर साथ मंहदी रंगभरी जी राज।

(ख) पिया मोर गइलन परदेस, ए बटोही भइया !
रात नाहीं नींद दिन तनी ना चएनवाँ, ए बटोही भइया,
सहतानी बहुते कलेस, ए बटोही भइया !
रोवत-रोवत हम भइली पगलिनियाँ, ए बटोही भइया,
एको न भेजवलन सनेस, एक बटोही भइया !

P.T.O.

नाहके जवानी हम के दिहलन विधाता, ए बटोही भइया !
कुछ दिन में पाकि जइहन केस, ए बटोही भइया !

अथवा

सारे काम फते होज्यागे त्रिलोकी का ध्यान करले ।
हन रखवाली खड़ी तला पै तू चित करके अस्नान करले ।।टेक।।
तेरे परण पै राम रटूंगी, मैं बचना तै नहीं हटूंगी ।
तिल भर भी ना बधू घटूंगी, बैरण मेरा ईमान करले ।।1।।
सुन्दर ध्यान भजन का फल सै, इसमें ना तिलभर हलचल सै ।
गात लरजता ठण्डा जल सै, एक बार करड़ी ज्यान करले ।।2।।

6. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए : (7×2=14)

(i) बिदेसिया

(ii) जंतसारी गीत

(iii) नाच

(iv) बारहमासा

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1417 **F**

Unique Paper Code : 2052201201

Name of the Paper : Hindi Kavita (Madhyakal Aur Aadhunikkal)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester / Type : II / DSC-3

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) कबीर पूँजी साह की, तू जिनि खोवै ख्वार।
खरी बिगूचनि होइगी, लेखा देती बार॥
कबीर माला काठ की, कहि समझावै तोहि।
मन न फिरावै आपणां, कहा फिरावे मोहि॥

P.T.O.

अथवा

हरि अपनैं आँगन कछू गावत।
तनक-तनक चरननि सौं नाचत, मनहिं मनहिं रिझावत।
बाँह उठाइ काजरी-धौरी, गैयनि टेरि बुलावत।
कबहुँक बाबा नंद पुकारत, कबहुँक घर मैं आवत।
माखन तनक आपनैं कर लै, तनक बदन में नावत।

(ख) अंग-अंग नग जगमगत दीपसिखा-सी देह।
दिया बढ़ाऐ हूँ रहै बड़ौ उज्यारौ गेह॥॥
केसरि कै सरि क्यौं सकै, चंपकु कितुक अनूप।
गात-रूप लखि जातु दुरि जातरूप कौ रूप।

अथवा

जब याद आती है बड़ों के उन सपूतों की कथा,
उनके सखा, संगी, विदूषक और दूतों की कथा।
तब निकल पड़ते हैं हृदय से वचन ऐसे दुख भरे-
होवें न ऐसे पुत्र चाहे हो कुल-क्षय है हरे!

(ग) जिनकी सेवाएँ अतुलनीय
पर विज्ञापन से रहे दूर;
प्रतिकूल परिस्थिति ने जिनके
कर दिए मनोरथ चूर-चूर!
- उनको प्रणाम!

अथवा

जीवन में एक सितारा था
माना वह बेहद प्यारा था
वह डूब गया तो डूब गया
अम्बर के आनन को देखो
कितने इसके तारे टूटे
कितने इसके प्यारे छूटे
जो छूट गए फिर कहाँ मिले
पर बोलो टूटे तारों पर
कब अम्बर शोक मनाता है
जो बीत गई सो बात गई

2. कबीर की भाषा पर प्रकाश डालिये। (15)

अथवा

तुलसी की भक्ति भावना की विवेचना कीजिए।

3. पाठ्यक्रम में निर्धारित 'बिहारी' के दोहों की विशेषताऐं लिखिए। (15)

अथवा

"'हिमालय के आँगन में' प्रसाद की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना व्यक्त हुई है" इस कथन की तर्कसंगत समीक्षा कीजिए।

4. 'जो बीत गयी सो बात गयी' कविता में निहित संदेश को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'उनको प्रणाम' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (8,7)

(i) सूरदास की भक्ति भावना

(ii) मैथिलीशरण गुप्त का साहित्यिक परिचय

(iii) 'गीत-फरोश' कविता की मूल संवेदना

(iv) 'बीती विभावरी जाग री' कविता का उद्देश्य

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1437 **F**

Unique Paper Code : 2052201201

Name of the Paper : Hindi kavita (Madhyakal Aur Aadhunikkal)

Type of the Paper : DSC-3

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) मैया, कबहिं बढ़ेगी चोटी ?

किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहुँ है छोटी ।

तू जो कहति बल की बेनी ज्यों, ह्वै है लांबी-मोटी ।

P.T.O.

काढ़त-गुहत न्हवावत जैहै नागिनि सी भुई लोटी ।
काचौ दूध पियावति पचि पचि, देति न माखन- रोटी।

अथवा

सारदूल को स्वांग करि, कुकर की करतूति ।
तुलसी तापर चाहिए, कीरति विजय विभूति ।
बहु मुख, बहु रुचि, बहु वचन, बहु अचार व्यवहार ।
इनको भलो मनाइबो, यह अज्ञान अपार ।

(ख) जगत जनायौ जिहिं सकलु, सो हरि जान्यौ नाँह ।
ज्यों आँखिनु सबु देखिये, आँखि न देखी जाँहि ।
मकराकृत गोपाल कैं सोहत कुँडल कान ।
धरयौ मनौ हिय-घर समरु, डयौढ़ी लसत निसान ।

अथवा

अधरों में राग अमन्द पिये,
अलकों में मलयज किये -
तू अब तक सोई है आली ।
आँखों में भरे विहाग री !

(ग) जीवन में मधु का प्याला था
तुमने तन मन दे डाला था
वह टूट गया तो टूट गया

मदिरालय का आँगन देखो
कितने प्याले हिल जाते हैं
गिर मिट्टी में मिल जाते हैं
जो गिरते हैं कब उठते हैं
पर बोलो टूटे प्यालों पर
कब मदिरालय पछताता है
जो बीत गई सो बात गई

अथवा

मैं लिखता ही तो रहता हूँ दिन-रात
तो तरह-तरह के बन जाते हैं गीत,
जी, रूठ- रूठकर मन जाते हैं गीत,
जी, बहुत ढेर लग गया, हटाता हूँ,
ग्राहक की मर्जी, अच्छा जाता हूँ,
या भीतर जाकर पूछ आइए आप,
है गीत बेचना वैसे बिल्कुल पाप,
क्या करूँ मगर लाचार
हार कर गीत बेचता हूँ ।

2. पाठ्यक्रम में निर्धारित दोहों के आधार पर कबीर की भक्ति का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

पाठ्यक्रम में दिए गए तुलसीदास के दोहों का सार लिखिए।

3. 'हिमालय के आँगन' में कविता का मूलभाव लिखिए। (15)

अथवा

'रईसों के सपूत' कविता का प्रतिपाद्य बताईए ।

4. 'उनको प्रणाम' कविता की मूल-संवेदना लिखिए। (15)

अथवा

'गीत फरोश' कविता में वर्णित व्यंग्य पर प्रकाश डालिए ।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए: (8,7)

(क) सूर का बाल-रूप वर्णन

(ख) बिहारी का साहित्यिक परिचय

(ग) 'जो बीत गयी सो बात गयी' का उद्देश्य

(घ) 'बीती विभावरी जाग री' कविता का काव्य-सौन्दर्य ।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1302 **F**

Unique Paper Code : 2052101201

Name of the Paper : हिंदी कविता : सगुण भक्तिकाव्य एवं रीतिकालीन काव्य

Name of the Course : बी.ए. (विशेष) हिंदी

Semester / Type : II / DSC

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्न पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (3×9=27)

(क) त्रिजटा नाम राच्छसी एका। राम चरन रति निपुन बिबेका॥
सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना। सीतहि सेइ करहु हित अपना॥
सपनें बानर लंका जारी। जातुधान सेना सब मारी॥
खर आरूढ़ नगन दससीसा। मुंडित सिर खंडित भुज बीसा॥

P.T.O.

अथवा

एके कहै अमल कमल मुख सीताजू को,
एकै कहै चंदसम आनँद को कंद री।
होइ जौ कमल तौ रयनि में न सकुचै री,
चंद जौ तौ बासर न होइ दुति मंद री।
बासर ही कमल रजनि ही में चंद,
मुख बासर हू रजनि बिराजै जगवंद री।
देखे मुख भावै अनदेखई कमल चंद,
तातें मुख मुखै सखी कमलै न चंद री।

(ख) बिन गोपाल बैरिन भई कुंजें।
तब ये लता लागति अति सीतल, अब भई ज्वाल की पुंजै।।
बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलैं, अलि गुंजें।
पवन पानि घनसार संजीवनि दधिसुत किरन भानु भई भुंजै।
ए, ऊधो, कहियो माधव सों बिरह कदन करि मारत लुंजै।
सूरदास प्रभु को मग जोवत ऑखियाँ भई बरन ज्यों ज्यों गुंजै

अथवा

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परै स्यामु हरित - दुति होई।।

लिखन बैठि जाकी सबी गहि गहि गरब गरूर।
भए न केते जगत के चतुर चितेरे कूर।।

(ग) रावरे रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारिये।
त्यों इन ऑखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहिं आन निहारिये।
एक ही जीव हुतौ सु तौ वारयौ सुजान सकोच औ सोच सहारिये।
रोकी रहै न, दहैं घनआनंद बावरी रीझ की हाथनि हारिये।।

अथवा

इंद्र जिमि जंभ पर, बाडव सुअंभ पर। रावन सदंभ पर रघुकुलराज है।
पौन बरिबाह पर, संभु रतिनाह पर ज्यों सहस्रबाह पर, राम द्विजराज है।।
दावा द्रुमदंड पर चीता मृगझुंड पर भूषण बितुंड पर, जैसे मृगराज है।
तेजतम अंस पर कान्ह जिम कंस पर त्यों मलेच्छ बंस पर, शेर सिवराज है।

2. तुलसीदास की भक्ति-भावना का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

केशव की काव्य-कला पर प्रकाश डालिए।

3. सूरदास के "भ्रमरगीत सार" का अपने शब्दों में विवेचन कीजिए। (15)

अथवा

मुक्तक काव्य की दृष्टि से बिहारी के काव्य का मूल्यांकन कीजिए।

4. घनानंद की शृंगारिक भावना का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

"भूषण का काव्य राष्ट्रीय-सांस्कृतिक एकता को प्रकट करता है" इस कथन का युक्तियुक्त विवेचन कीजिए।

5. टिप्पणी लिखिए (**किन्हीं दो पर**) (2×9=18)

(i) तुलसीदास के काव्य में लोकमंगल की भावना

(ii) सूरदास की काव्य भाषा

(iii) केशव का आचार्यत्व

(iv) बिहारी की सौंदर्य चेतना

(v) रीतिमुक्त कवि घनानंद

(vi) वीर काव्य परंपरा और भूषण

(2000)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

E

Sr. No. of Question Paper : 3438

Unique Paper Code : 62051201

Name of the Paper : हिन्दी कविता (मध्यकाल और आधुनिक काल)

Name of the Course : B.A. (P) HINDI – CBCS

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10 + 10 = 20)

(क) नीच गुड़ी ज्यों जानिबो, सुनि लखि तुलसीदास।

ढीलि दिये गिरि परत महि, खैंचत चढ़त आकास ।।

P.T.O.

सारदूल को स्वांग कर, कूकर की करतूति।

तुलसी तापर चाहिए कीरति विजय विभूति ।।

(ख) नहि पराग नहि मधुर मधु, नहि विकास इहि काल।

अली, कली ही सौं बंध्यो, आगे कौन हवाल ।।

अब-अब नग जगमगत दीपसिखा सी देह।

दिया बढ़ाएँ हूँ रहे चहौ उजयारो गेह ।।

(ग) अम्बर पनघट में डुबो रही

तारा-घट ऊषा नागरी!

खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा

किसलय का अंचल डोल रहा

लो यह लतिका भी भर लाई-

मधु मुकुल नवल रस गागरी

2. कबीर के राम का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

वात्सल्य की दृष्टि से सूरदास के काव्य का मूल्यांकन कीजिए।

3. बिहार की काव्य भाषा का विवेचन कीजिए। (15)

अथवा

घनानंद की प्रेम व्यंजना को स्पष्ट कीजिए।

4. नागार्जुन यथार्थ चेतना के कवि हैं। इस कथन का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

गीत फरोश कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (5+5=10)

(क) कबीरदास

(ख) तुलसीदास

P.T.O.

(ग) संचितीकरण सूत्र

(घ) उपयोगकार प्रभाव

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 1353 **F**

Unique Paper Code : 2052101203

Name of the Paper : Hindi Nibandh Evam Anya Gadya Vidhaein

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester / Type : II / DSC

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×2=20)

(क) प्रेम की भाषा शब्द-रहित है। नेत्रों की, कपोलों की, मस्तक की भाषा भी शब्द-रहित है। जीवन का तत्व भी शब्द से परे है। सच्चा आचरण-प्रभाव, शील, अचल-स्थित संयुक्त आचरण न तो साहित्य के लंबे व्याख्यानों से गठा जा सकता है; न वेद

P.T.O.

की श्रुतियों के मीठे उपदेश से; न अजील से; न कुरान से; न धर्मचर्चा से; न केवल सत्संग से; जीवन के अरण्य में धंसे हुए पुरुष के हृदय पर प्रकृति और मनुष्य के जीवन के मौन व्याख्यानों के यत्न से, सुनार के छोटे हथौड़े की मंद-मंद चोटों की तरह आचरण का रूप प्रत्यक्ष होता है।

अथवा

दूसरों के, विशेषतया अपने परिचितों के, थोड़े क्लेश या शोक पर जो वेगरहित दुःख होता है, उसे सहानुभूति कहते हैं। शिष्टाचार में इस शब्द का प्रयोग इतना अधिक होने लगा है कि यह निकम्मा सा हो गया है। अब प्रायः इस शब्द से हृदय का कोई सच्चा भाव नहीं। सहानुभूति के तार, सहानुभूति की चिट्ठियाँ लोग यों ही भेजा करते हैं। यह छद्म शिष्टता मनुष्य के व्यवहार क्षेत्र से सच्चाई के अंश को क्रमशः चरती जा रही है।

(ख) साधु ने समझाया, "महाराज, भ्रष्टाचार और सदाचार मनुष्य की आत्मा में होता है; बाहर से नहीं होता। विधाता जब मनुष्य की आत्मा में होता है; बाहर से नहीं होता। विधाता जब मनुष्य को बनाता है तब किसी की आत्मा में ईमान की अकल फिट कर देता है और किसी की आत्मा में बेईमानी की। इस कल में से ईमान या बेईमानी के स्वर निकलते हैं, इन्हें दबाकर ईमान के स्वर कैसे निकाले जाएं? मैं कई वर्षों से इसी के चिंतन में लगा हूं।"

अथवा

जैसे अपने जड़ तन से निकल कर तदात्म मन कहीं घोर निभृत में विभोर हो रहा हो, चेहरे पर तनाव नहीं, रम्य रेखाओं में सलवटें नहीं, असंभव की संभावनाओं से उदासीन, आत्मानुशासित दृष्टि का सृष्टि चेतन प्रसार। मैं छेड़ता न था कि उस एकात्म चौतन्य चंद्र पर बादल न रुके, कुमुद न कुम्हलाए, तनिक कंकड़ी के पड़े स्वस्थ जल घायल न हो।

2. "जातियों का अनूठापन" निबंध की तात्विक समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

"आचरण की सभ्यता" निबंध का मूल सन्देश लिखिए।

3. "करुणा" निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की निबंध-शैली का विवेचन कीजिए। (15)

अथवा

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने "भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या" निबंध में किन-किन समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया है?

4. "निराला की साहित्य साधना-नए संघर्ष" के आधार पर निराला की साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (15)

P.T.O.

अथवा

"सदाचार का ताबीज" की भाषा-शैली पर चर्चा कीजिए।

5. संस्मरण की विशेषताओं के आधार पर "अज्ञेय के साथ" संस्मरण की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

"अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा" यात्रा- वृत्तांत का सार लिखिए।

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए : (10)

(क) राहुल सांकृत्यायन का साहित्यिक परिचय दीजिए।

(ख) "करुणा" निबंध का प्रतिपाद्य

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

F

Sr. No. of Question Paper : 1330

Unique Paper Code : 2052101202

Name of the Paper : Hindi Sahitya Ka Itihas (Aadhunik Kal)

Name of the Course : B.A.(Hons.) Hindi – DSC-5

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. नवजागरण के आलोक में भारतेंदु युगीन साहित्य का विश्लेषण कीजिए। (18)

अथवा

खड़ी बोली आन्दोलन के संदर्भ में महावीर प्रसाद द्विवेदी के योगदान पर प्रकाश डालिए।

P.T.O.

2. हिंदी आलोचना की विकास यात्रा पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

हिंदी निबंध की विकास यात्रा को रेखांकित कीजिए।

3. छायावादी कविता की मुख्य प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए। (18)

अथवा

प्रगतिवादी काव्य-रचना के परिवेश का विश्लेषण कीजिए।

4. दलित शब्द की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए दलित चेतना के उदय और विकास को रेखांकित कीजिए। (18)

अथवा

समकालीन कथा-साहित्य पर प्रकाश डालिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए :- (9+9=18)

(क) मध्यकालीन बोध

(ख) स्वाधीनता आन्दोलन और हिंदी साहित्य

(ग) संस्मरण

(घ) साठोत्तरी कविता

(ङ) साहित्यिक पत्रकारिता

May/June 2023

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3680 E

Unique Paper Code : 12051201

Name of the Paper : Hindi Sahitya Ka Itihas (Aadikal Aur Madhyakal)

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi - CBCS**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. साहित्येतिहास-लेखन में कालविभाजन एवं नामकरण की समस्या पर विचार कीजिए। (14)

अथवा

हिन्दी-साहित्येतिहास-लेखन की परम्परा का परिचय दीजिए।

P.T.O.

2. आदिकालीन लौकिक साहित्य का परिचय दीजिए। (14)

अथवा

आदिकाल के राजनीतिक-सामाजिक एवं सांस्कृति परिवेश पर प्रकाश डालिए।

3. भक्ति-आन्दोलन के अखिल भारतीय स्वरूप का विश्लेषण करीजिए।

अथवा

भक्तिकाव्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि का परिचय दीजिए। (14)

4. रीतिकाल की प्रवृत्तियों का विश्लेषण कीजिए। (14)

अथवा

रीतिकाल की युगीन पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालिए।

5. (क) किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए। (6,6)

(i) नाथ-साहित्य

(ii) सन्त-साहित्य

(iii) प्रेममार्गी सूफी-साहित्य

(iv) रीतिबद्ध काव्य

(ख) किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए। (7)

(i) रीतिकालीन नीतिकाव्य

(ii) सिद्ध-काव्य

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper	:	**3079**	**E**
Unique Paper Code	:	62051213	
Name of the Paper	:	Hindi - A	
Name of the Course	:	**B.A. (Prog.) Functional Hindi**	
Semester	:	II	

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश:

. इस प्रश्न पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए: 10•2

(क) हरि म्हारा जीवण प्राण अधार।।

और आसिरा णा म्हारा थें विण,तीनूं लोक मझार।

थे विण म्हाणे जग णा सुहावां, निरख्यां सब संसार।

मीरा रे प्रभु दासी रावली, लीज्यो णेक णिहार।।

अथवा

वे न इहां नागर, बढ़ी जिन आदर तो आब।

फूल्यौ अनफूल्यौ भयौ गवंई-गांव, गुलाब।।

(ख) अमल धवलगिरि के शिखरों पर

बादल को घिरते देखा है।

छोटे-छोटे मोती जैसे

उसके शीतल तुहिन कणों को

P.T.O.

मानसरोवर के उन स्वर्णिम
कमलों पर गिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है।

अथवा

रे, रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,
जाने दे उनको स्वर्ग धीर,
पर, फिरा हमें गांडीव-गदा,
लौटा दे अर्जुन-भीम वीर।

2. किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय दीजिए: 10

(क) कबीर

(ख) नागार्जुन

3. मीरा के पदों का आशय स्पष्ट कीजिए। 10

अथवा

बिहारी की काव्य-कला पर प्रकाश डालिए।

4. 'हिमाद्रि तुंग श्रृंग से' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए। 10

अथवा

'मेरे नगपति मेरे विशाल' कविता की मूल संवेदना लिखिए।

5. आदिकालीन साहित्य का सामान्य परिचय दीजिए। 10

अथवा

छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ लिखिए।

6. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए:। 5×3

(क) किसी एक आधुनिक भारतीय भाषा का उद्भव एवं विकास

(ख) मध्यकालीन हिंदी

(ग) राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी

(घ) सगुण भक्ति काव्य

(ङ) भारतेंदु युगीन कविता

S.No. 3083

Unique Paper Code : 62051203

Name of the Course : B.A.Programe(Hindi)CBCS

Name of the Paper : Hindi - B

Semester : II

Time 3 hrs

Maximum Marks :

छात्रों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं तीन अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

(क) पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ ।
ढाई आखर प्रेम का , पढ़ै सु पंडित होइ ।। 10

अथवा

उतरि ठाढ़ भए सुरसरि रेता।सीय रामु गुह लखन समेता।।
केवट उतरि दंडवत कीन्हा।प्रभुहि सकुच एहि नहिं कछु दीन्हा ।।
पिय हिय की सिय जाननिहारी। मनि मुदरी मन मुदित उतारी।।
कहेउ कृपाल लेहि उतराई। केवट चरन गहे मैं अकुलाई।।

(ख) बतरस-लालच लाल की, मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करैं , भौंहनु हँसे , दैन कहैं नटि जाइ ।। 10

अथवा

रूप निधान सुजान लखें बिन आँखिन दीठि हि पीठिदई है।
अखिल ज्यौं खरकै पुतरीन मैं ,सूल की मूल सलाक भई है।
ठौर कहूँ न लहै ठहरानि की मूंदें महा अकुलानि भई है।
बूढ़त ज्यौं घनआनंद सोचि, दई बिधि व्याधि असाधि नई है।।

(ग) बीते हुए बालपन की यह 10
क्रीड़ापूर्ण वाटिका है।।
वही मचलना, वही निकलना
हंसती हुई नाटिका है ।।

अथवा

चढ़ रही थी धूप ;
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप;
उठी झुलसाती हुई लू,
रुई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिंनगीं छा गयीं,
प्राय: हुई दुपहर
वह तोड़ती पत्थर।

2 कबीर अथवा तुलसी की काव्य भाषा की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए? 10

3 रीतिकालीन कवि बिहारी अथवा घनानंद की जीवन एवं साहित्यिक परिचय दीजिए। 10

4 सुभद्रा कुमारी चौहान अथवा सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का साहित्यिक परिचय दीजिए। 10

5 (क) निम्नलिखित में से किसी एक पर टिप्पणी लिखिए - 5

(i) हिंदी का उद्भव और विकास।

(ii) आधुनिक काल।

(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए। 5+5=10

(i) निर्गुण भक्ति काव्य।

(ii) बिहारी की कविता गागर में सागर।

(iii) रीतिमुक्त काव्य।

(iiii) छायावाद।

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3412 **E**

Unique Paper Code : 62054408

Name of the Paper : Anya Gadya Vidhaein (DSC)

Name of the Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'साहित्य का उद्देश्य' निबन्ध का प्रतिपाद्य बताइए। (12)

अथवा

'भाषा, संस्कृति और राष्ट्रीयता' निबन्ध का सार लिखिए।

P.T.O.

2. 'भक्तिन' का चरित्र-चित्रण कीजिए। (12)

अथवा

अदम्य जीवन में लेखक ने बंगाल के अकाल का सजीव चित्रण किया है। प्रकाश डालिए।

3. वैष्णव जन पाठ का उद्देश्य लिखिए। (12)

अथवा

शायद एकांकी के नामकरण की सार्थकता सिद्ध करते हुए उसकी मूल संवेदना बताइए।

4. 'उखड़े खंभे' पाठ का कथानक संक्षिप्त में लिखिए। (12)

अथवा

'लक्खा बुआ' का उद्देश्य बताइए।

5. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (7×2=14)

(क) लक्खा बुआ की शादी हुई लेकिन ससुराल गई ही नहीं। ससुराल के लिए घर से चलीं। लेकिन पहुँची नहीं। कई बार शादी हुई। कई बार घर से दूल्हे के साथ ससुराल के लिए निकलीं। पहुँची एक बार भी नहीं। गाँव से बसहर कदम्ब पेड़ के नीचे होती उतारते ही बिस्कोहर के लौंडे पहुँच जाते। ससुराल वालों को मार-पीट कर भागा देते। लक्खा को लौटा लाते। लक्खा पुराने दिलगीरों को 'ना' नहीं कर पाती। मुहल्ला फिर से आबाद, बिस्कोहरी भाषा में जगजिवार हो जाता।

(ख) जीवन के दूसरे परिच्छेद में भी सुख की अपेक्षा दुःख ही अधिक है। जब उसने गेहुँए रंग और बटिया जैसे मुखवाली पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले तब सास और जेठानियों ने ओठ बिचका कर उपेक्षा प्रकट की। उचित भी था, क्योंकि सास तीन-तीन कमाऊ वीरों की विधात्री बनकर मचिया के ऊपर विराजमान पुरखिन के पद पर अभिषिक्त हो चुकी थी और दोनों

जिठानियाँ काकभुशुण्डी जैसे काले लालों की क्रमबद्ध सृष्टि करके इस पद के लिए उम्मीदवार थीं। छोटी बहू के लीक छोड़कर चलने के कारण उसे दण्ड मिलना आवश्यक हो गया।

(ग) गर्व से मेरी छाती फूल उठी। कौन कहता है कि बंगाल मर गया है? जहाँ भूख और बीमारियों से लड़कर भी मनुष्यों के बालकों में क्रांति की चिरजीवी रखने का अपराजित साहस है, वह राष्ट्र कभी भी नहीं मर सकेगा। हड्डी-हड्डी से लड़ने वाले या योद्धा जीवन की महान शक्ति को अभी तक अपने में जीवित रख सके हैं, संसार कहता है, स्टालिनग्राड में लोग खँडहरों में से लड़े थे और उन्होंने दुश्मन के दाँत-खट्टे कर दिए। उन्होंने बर्बरता की धारा को रोककर रूस को गुलाम होने से बचा दिया। किन्तु मैं पूछता हूँ, क्या झिंझिरगंज दूसरा स्टालिनग्राड नहीं? मनुष्य भूख से तड़प-तड़पकर यहाँ जान दे चुके हैं, वे भीषण रोगों का शिकार हो चुके हैं।

(घ) यह उपलब्धि जो चरम मुक्ति और चरम निर्वाण ही है, वैष्णवजन को ही प्राप्त हो सकती है। उस वैष्णव जन के दर्शन से 71 पीढ़ियाँ तर जाती हैं क्योंकि वही तो शुद्ध हृदय वाला ही ईश्वर और मनुष्य से प्रेम कर सकता है उसके लिए इस भावना से बढ़कर मूल्यवान और कुछ नहीं कि हमने किसी दूसरे के दुख में हिस्सा बटाया। अहंकाररहित, भला करने के अभिमान से शून्य, पूर्ण व्यालुता ही धर्म का सर्वोच्च रूप है।

6. निम्नलिखि गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (7+6=13)

(क) रो रही हो और कहती हो, रो नहीं रही_ अरे, तो जिन्दगी कटती ही इस तरह से है! पर हम कहते_है_फिर भी_ (सोचता हुआ) कोई ऐसी चीज जिन्दगी में होनी जरूर चाहिए जो_।

स्त्री पल्ले से मुँ ह साफ करके स्वस्थ हो जाती है।

स्त्री: क्या कह रहे थे तुम?

पुरुष : ...जो आदमी को रोज-राज एक नया उत्साह दे और... जो है, इसमें कुछ नहीं है।

अथवा

महात्मा जी ने इस तर्क को स्वीकार नहीं किया। कहा, मैं सत्य के अतिरिक्त किसी और राह से स्वराज्य नहीं चाहता। चौरीचौरा और बम्बई में जो कुछ हुआ, उससे स्पष्ट हो गया कि देश अभी सत्याग्रह के लिए तैयार नहीं है। स्वाधीनता कभी किसी के हाथ से दान की सरह नहीं ली जाती है। लेने पर वह टिकती भी नहीं, इस प्रकार, उसे हृदय के रक्त से प्राप्त करना होता है। अहिंसा की कीमत पर मैं भारत के लिए स्वाधीनता लेना स्वीकार नहीं करूँगा बिना अहिंसा के भारत स्वाधीनता नहीं ग्रहण करेगा।

(ख) हालाँकि भारत एक बहुभाषी, बहुधर्मी देश होने के साथ-साथ सामाजिक-सांस्कृतिक विविधताओं और विषमाताओं वाला देश जो भाषा क्षेत्र, धर्म सम्प्रदाय और जातियों में विभकत है। बहुल

और विषमतावादी संस्कृति के चलते यहाँ 'हम' की भावना का पर्याप्त आभाव देखने को मिलता है। किन्तु इस सबके बावजूद देश के लोगों में भाषात्मक एकता दिखाई देती है और इसका आधार हिन्दी भाषा है। जहाँ हिन्दी में लोक प्रचलित शब्दों और मुहावरों को अंगीकार करने का गुण या शक्ति है और इसके द्वारा उसने स्वयं को समृद्ध और स्वीकार्य बनाया है अर्थात् उसकी संस्कृति जुड़ने और जोड़ने की संस्कृति रही है, वहीं संस्कृत में यह गुण नहीं है, उसकी संस्कृति उजाड़ने की नहीं तोड़ने की रही है।

अथवा

यह भी इसी के प्रगट होता है। प्राचीन भारत जिस समय उन्नति की दशा में था और जातीयता का यहाँ पूर्ण प्रादुर्भाव था उस समय अवश्य संस्कृत देश भर की एक भाषा वैसे ही रही जैसी अब अंग्रेजी यहाँ होती जाती है। पीछे प्राकृत ने जोर पकड़ा जो

एक समय ग्रामीण और नीच लोगों की भाषा थी और मंजते-मंजते यहाँ तक पुष्ट पड़ गई कि संस्कृत को दबा लिया और अनेक भेद उसके हो गए और भेद होने के साथ ही देश में जातीयता को भी टुकड़े-टुकड़े कर डाला।

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

E

Sr. No. of Question Paper : 3463

Unique Paper Code : 62054408

Name of the Paper : Anya Gadya Vidhaein (DSC)

Name of the Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. जातीयता के गुण निबंध का सार लिखिए। (12)

अथवा

प्रेमचंद ने साहित्य के क्या-क्या उद्देश्य बताए हैं। प्रकाश डालिए।

P.T.O.

2. भक्तिन का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'अदम्य जीवन' रिपोर्ताज का उद्देश्य बताइए।

3. लेखक के अनुसार वैष्णव जन की क्या-क्या विशेषताएँ होती हैं। लिखिए। (12)

अथवा

'शायद' एकांकी के पात्रों (स्त्री और पुरुष) का चरित्र-चित्रण कीजिए।

4. 'उखड़े खंभे' पाठ में निहित व्यंग्य को बताइए। (12)

अथवा

'लक्खा बुआ' की चारित्रिक विशेषताएँ सोदाहरण लिखिए।

5. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (7×2=14)

(क) आधुनिक साहित्य में वस्तुस्थिति-चित्रण की प्रवृत्ति इतनी बढ़ रही है कि आज की कहानी यथासम्भव प्रत्यक्ष अनुभवों की सीमा के बाहर नहीं जाती। हमें केवल इतना सोचने से ही सन्तोष नहीं होता कि मनोविज्ञान की दृष्टि से सभी पात्र मनुष्यों से मिलते-जुलते हैं, बल्कि हम यह इत्मीनान चाहते हैं कि वे सचमुच के मनुष्य हैं, और लेखक के यथा संभव उनका जीवन-चरित्र ही लिखा है क्योंकि कल्पना के गढ़े हुए आदमियों में हमारा विश्वास नहीं हैय उनके कार्यों और विचारों से हम प्रभावित नहीं होते। हमें इसका निश्चय हो जाना चाहिए कि लेखक ने जो सृष्टि की है, वह अप्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर की गई है और अपने पात्रों की जबान से वह खुद बोल रहा है।

(ख) शास्त्र का प्रश्न भी भक्तिन अपनी सुविधा के अनुसार सुलझा लेती है। मुझे स्त्रियों का सिर घुटाना अच्छा नहीं लगता, अतः मैंने भक्तिन को रोका। उसने अकुण्ठित भाव से उत्तर दिया कि शास्त्र में लिखा है। कुतूहलवश मैं पूछ ही बैठी क्या लिखा है? तुरन्त उत्तर मिला 'तीरथ गए मुड़ाये सिद्ध'। कौन से शास्त्र का

यह रहस्यमय सूत्र है, यह जान लेना मेरे लिए सम्भव ही नहीं था। अतः मैं हार का मौन हो रही और भक्तिन का चूड़ाकर्म हर बृहस्पतिवार को, एक दरिद्र नापित के गंगाजल से धुले अस्तुरे यथाविधि निष्पन्न होता रहा।

(ग) वास्तव में हमें कोई भी रोता नहीं दिखा। सब मानो अपने-अपने काम में लगे थे। मैंने देखा, डॉक्टर चुपचाप घरों की ओर देख रहा है। बाँस के सुंदर-सुंदर झोंपड़े! सदियों से बंगाल-हम लोगों-पर बार-बार बाहरी हमले होते रहे; मगर आक्रमणकारी कभी भी यहाँ की शस्य-श्यामला पवित्र भूमि को नहीं रौंद सके। यहाँ मनुष्य को इतना समय मिल चुका था कि वह बैठकर इतने आराम से इतने सुंदर और स्वच्छ घर बना सकता। और आज वही घर निर्जनता की अर्गला लगाए मूक खड़े थे! अकाल ने उन पर अपनी जो वीभत्स छाया डाल थी, उसका धुँधलका अभी तक भी मनो कनों में छिपा बैठा था।

(घ) विशेषज्ञ ने निवेदन किया, "सरकार, मैं विशेषज्ञ हूँ और भूमि तथा वातावरण की हलचल का अध्ययन करता हूँ। मैंने परीक्षण के

द्वारा पता लगाया कि जमीन के नीचे एक भयंकर विद्युत-प्रवाह घूम रहा है। मुझे यह भी मालूम हुआ कि आज वह बिजली हमारे शहर के नीचे से निकलेगी। आपको मालूम नहीं हो रहा है पर मैं जानता हूँ कि इस वक्त हमारे नीचे से भयंकर बिजली प्रवाहित हो रही है यदि हमारे बिजली के खम्भे जमीन में गड़े रहते तो वह बिजली खम्भों के द्वारा ऊपर आती और उसकी टक्कर अपने पावरहाउस् की बिजली से होती। तब भयंकर विस्फोट होता। शहर पर हजारों बिजलियाँ एक साथ गिरतीं। तब न एक प्राणी जीवित बचता, न एक इमारत खड़ी रहती।"

6. निम्नलिखि गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (7+6=13)

(क) एक-दो राज्यों में संस्कृत को दूसरी, तीसरी राजभाषा का दर्जा भी प्राप्त गया है। जिस भाषा को मुट्ठी भर लोगों को छोड़कर आज कोई जानता-समझता नहीं उस पर इतना जोर देने का क्या औचित्य है? यथार्थ में एक मृत और अप्रासंगिक भाषा को जबरन जिन्दा करने की यह कोशिश उसी वर्ण वर्चस्वता की

भावना की द्योतक है जिसके चलते दलितों को पहले सहस्राब्दियों तक जबरन शिक्षा से वंचित रखकर और फिर अयोग्य घोषित करके शासन-सत्ता हर जगह से दूर रखा गया।

अथवा

वेद पढ़ने से, वर्णाश्रम धर्म का पालन करने से, कण्ठी पहनने से अथवा तिलक लगाने से कोई वैष्णव जन नहीं होता। यह सब पाप के मूल हो सकते हैं। पाखण्डी भी माला पहन सकता है, तिलक लगा सकता है, वेद पढ़ सकता है, मुख से राम-नाम का जाप कर सकता है। लेकिन पाखण्डी रहते हुए सत्याचरणी नहीं बना जा सकता। पाखण्डी पर-पीड़ा का निवारण नहीं कर सकता और पाखण्ड के रहते हुए चंचल चित्त को निचल नहीं रखा जा सकता।

(ख) "राम ने सीता को बनोबास दे दिया। लच्छमन, भरत, शत्रुघन, हनुमान, रानी कौसेला रोवैं। घिरई चिरगुन रोवैं। हुआँ लव-कुस भए। वाल्मीकि ने सिखाया-पढ़ाया। सीता मैया ने लड़कों को

समझाया-चारों दिशाओं में जाना अवधपुरी न जाना लेकिन भाग का लेखा कौन मिटावे। लव-कुस ने लड़ाई में हनुमान, भरत, लच्छमन सबको जीत लिया। आखिर में राजा राम आए। तब सीता मैया यह अनर्थ जानकर दौड़ी-दौड़ी आईं। खुसी भी थी कि लड़कों ने बा पके भाइयों को हरा दिया। राम ने पहचान कर पकड़ने की कोसिस की तो भास्य के मारे धरती माँ से बोलीं-माई अब ई दिन ना दिखाओ। जिसने भारी पाँव घर से निकाल दिया।"

अथवा

तीसरी श्रेणी के वे हैं जो ऐसे स्थान में रहते हैं, जहाँ गर्मी और सर्दी दोनों समान भाव से होती हैं। छः ऋतुओं का समय-समय प्रकाश होता है। वहाँ की धरती उर्वर प्राकृतिक दृश्य वैचित्र्य की अधिकाई से सुशोभित रहती है। ऐसा देश प्राचीन भारत, प्राचीन ग्रीस और प्राचीन इटली तथा मिसिर देश हैं। इनमें ग्रीस और इटली अपनी अवनति देख ठीक समय में उससे छुटकारा पाने का यत्न कर शीघ्र अपनी उन्नति की दशा को पहुँच गए किंतु भारत के भाग्य में क्या बदा है सो कुछ जाना नहीं जाता।

P.T.O.

शताब्दी पर शताब्दी बीती जाती है किंतु इसके दुर्भाग्य की दशा में कुछ अदल-बदल नहीं होते दिखती। जैसी अचेत दशा में भारत पड़ा सो रहा है उससे बोध होता है मानो इसकी नाड़ी में जीवनी-शक्ति है ही नहीं इसमें कुछ भी दम होता तो अवश्य उठने की चेष्टा करता।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

E

Sr. No. of Question Paper : 3564

Unique Paper Code : 12053407

Name of the Paper : Bhasha Aur Samaj (SEC)

Name of the Course : **B.A. (Hons) Hindi**

Semester : IV

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. भाषा और समाज विज्ञान का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

भाषा और समाज के बीच संबंध को सोदाहरण लिखिए। (15)

2. बहुभाषिकता को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

P.T.O.

भाषा और जातीयता के बीच संबंध पर प्रकाश डालिए।

3. भाषा और वर्ग का अंतर्संबंध स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

भाषाई अस्मिता क्या है? वह जेंडर से किस प्रकार संबंधित है?

4. भाषा सर्वेक्षण के स्वरूप और प्रविधि की विवेचना कीजिए। (15)

अथवा

भाषा नमूनों को स्पष्ट करते हुए उनका विश्लेषण कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी कीजिए : (8,7)

(क) भाषा व्यवहार

(ख) भाषा और संस्कृति

(ग) भाषा के नवीन प्रयोग

(घ) भाषा और जाति

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No...............

E

Sr. No. of Question Paper : 3985

Unique Paper Code : 12051402

Name of the Paper : हिंदी कविता (छायावाद के बाद)

Name of the Course : **B. A (Hon) Hindi**

Semester : IV

Duration : 3 Hours   Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (7.5×2=15)

(क) अधेड़ उम्र का मुच्छड़ रोबीला चेहरा

आहिस्ते से बोला : हाँ सा'ब

लाख कहता हूँ नहीं मानती मुनिया

टाँगे हुए है कई दिनों से

P.T.O.

अपनी अमानत

यहाँ अब्बा की नजरों के सामने

मैं भी सोचता हूँ

क्या बिगाड़ती हैं चूड़ियाँ

किस जुर्म पे हटा दूँ इनको यहाँ से ?

अथवा

जैसे कोई बिजली कौंधा जाए

एक दबी हुई स्मृति

झकझोर जाती है मुझे

और मुझे लगता है कहीं मेरे भीतर भी है

एक पागल स्त्री

जो दरवाजों को पीटती

और दीवारों को खुरचती हुई

उसी तरह लगा रही है चक्कर

मेरे उपमहाद्वीप के विशाल नक्शे में

न जाने कब से।

(स्व) हो गई है पीर पर्वत - सी पिघलनी चाहिए

इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए

आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी

शर्त थी लेकिन कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए

हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में

हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं

मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए

अथवा

यह गीत सुबह का है, गा कर देखें,

यह गीत गजब का है, ढा कर देखें,

यह गीत जरा सूने में लिखा था,

यह गीत वहाँ पूने में लिखा था।

यह गीत पहाड़ी पर चढ़ जाता है

यह गीत बढ़ाये से बढ़ जाता है

यह गीत भूख और प्यास भगाता है

जी, यह मसान में भूख जगाता है,

यह गीत भुखली की है दवा हुजूर

यह गीत तपेदिक की है दवा हुजूर ।

2. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं दो का रचना-कौशल स्पष्ट कीजिए। (7.5×2=15)

(क) साँप !

तुम सभ्य तो हुए नहीं

नगर में बसना

भी तुम्हें नहीं आया।

एक बात पूछूँ-(उत्तर दोगे ?)

तब कैसे सीखा डँसना-

विष कहाँ पाया? (मूल संवेदना)

(ख) राष्ट्रगीत में भला कौन वह

भारत-भाग्य-विधाता है

फटा सुथन्ना पहने जिसका

गुन हरचरना गाता है। (व्यंग्यात्मकता)

(ग) और क्या जाने क्या

उसे दिख गया मेरे भीतर

कि हिल उठा वह

और पूरा का पूरा मैं गिर पड़ा नीचे

शर्मिंदा हूँ प्रभु

और इस घटना पर हिल रहा हूँ अब तक

पर कोई करे तो भी क्या

समय ही कुछ ऐसा है

कि पानी नदी में हो

या किसी चेहरे पर

झाँककर देखो तो तल में कचरा

कहीं दिख ही जाता है। (काव्य बिम्ब)

3. 'यह दीप अकेला' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'सिंदूर तिलकित भाल' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

4. 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए। (15)

अथवा

हिंदी ग़ज़ल में दुष्यन्त कुमार का योगदान स्पष्ट कीजिए।

5. 'धार' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'गीत फ़रोश' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4007 E

Unique Paper Code : 12051403

Name of the Paper : हिन्दी उपन्यास

Name of the Course : B.A. (H) Hindi

Semester : IV

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1 इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1 सप्रसंग व्याख्या कीजिये : (7+8=15)

(क) "मैं तो आपसे बार-बार कह चुका, आप मेरे लिए कुछ ना करें। मुझे धन की जरूरत नहीं। आपकी भी वृद्धावस्था है। शांत-चित्त होकर भगवत-भजन कीजिये। समरकान्त तीखे शब्दों में बोले "धन न रहेगा लाला, तो भीख मँगोगे। यों चैन से बैठकर घरखा ना चलाओगे। यह तो न होगा, मेरी कुछ मदद करो, पुरुषार्थहीन मनुष्यों की तरह कहने लगे, मुझे धन की जरूरत नहीं? कौन है जिसे धन की जरूरत नहीं? साधु-सन्यासी तक तो पैसों पर

P.T.O.

प्राण देते हैं। धन बड़े पुरुषार्थ से मिलता है। जिसमें पुरुषार्थ नहीं, वह क्या धन कमाएगा? बड़े-बड़े तो धन की उपेक्षा कर ही नहीं सकते, तुम किस खेत की मूली हो!"

अथवा

"अमि-जोत के सहमे हुए चेहरे और क्षण भर को डॉक्टर के माथे पर खिंच आए बल ...लगा जैसे शकुन से ही कोई भारी अपराध हो गया हो। जरूर ही उस समय उसके चेहरे पर बड़ी कातर-सी बेबसी उभर आई होगी, तभी तो डॉक्टर ने पीठ सहलाकर उसे दिलासा दी, "बच्चों की बात को लेकर तुम इतनी परेशान क्यों हो रही हो? टैंक इट ईज़ी.." पर खुद वह शायद ईज़ी नहीं हो पाये थे।

(ब) शकुन चक्की पीस-पीसकर बेटे का जीवन बनाने में अपने आप को स्वाहा कर देने वाली माँ नहीं थी; बल्कि स्वतंत्र व्यक्तित्व, आकांक्षाएँ और आजीविका के साधनों से तृप्त माँ थी। इस नारी और माँ के आपसी द्वंद का अध्ययन ही शकुन को उसका वर्तमान रूप देता था। आज जो लगता है कि कहानी में बिखरी लोक-कथाएँ अनायास ही नहीं आ गई हैं, वे शकुन के जीवन की दो नितांत विरोधी स्थितियाँ, मिथ और वास्तविकता के अंतर्विरोध को उजागर करती हैं"।

अथवा

"मनुष्य स्वतंत्र विचारों वाला प्राणी होते हुए भी परिस्थितियों का दास है। और यह परिस्थिति-चक्र क्या है, पूर्वजन्म के कर्मों के फल का विधान है। मनुष्य की विजय वहीं संभव है, जहां वह परिस्थितियों के चक्र में पड़कर उसी के साथ चक्कर न खाए, वरन अपने कर्तव्याकर्तव्य का विचार रखते हुए उस पर विजय पावे"।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं दो उपन्यासकारों पर टिप्पणी लिखें: (7+8=15)

(क) लाला श्रीनिवास दास

(ख) प्रेमचंद

(ग) फणीश्वरनाथ रेणु

(घ) मन्नू भण्डारी

3. 'कर्मभूमि' उपन्यास के पात्र गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित हैं - इस कथन की समीक्षा कीजिये। (15)

अथवा

'कर्मभूमि' उपन्यास के आधार पर प्रेमचंद की भाषा शैली पर प्रकाश डालें?

4. भारतीय दर्शन वृत्तियों के दमन पर नहीं शमन पर आधारित है, इस कथन के आलोक में 'चित्रलेखा' उपन्यास की समीक्षा कीजिये। (15)

अथवा

'चित्रलेखा चरित्र-प्रधान उपन्यास है'- इस कथन के परिप्रेक्ष्य में चित्रलेखा का चरित्र-चित्रण कीजिये।

5. 'आपका बंटी' उपन्यास की भाषा-दृष्टि पर विचार करें। (15)

अथवा

'आपका बंटी' उपन्यास में वैवाहिक-संबंधों के बदलते मूल्यों को रेखांकित किया गया है- इस कथन की समीक्षा कीजिये।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

E

Sr. No. of Question Paper : 3145

Unique Paper Code : 62053408

Name of the Paper : Vigyapan aur Hindi Bhasha (SEC)

Name of the Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. विज्ञापन के प्रमुख प्रकारों का सविस्तार वर्णन कीजिए। (12)

अथवा

विज्ञापन की सामाजिक और व्यावसायिक भूमिका पर विचार कीजिए।

2. रेडियो और टेलीविजन विज्ञापनों के अंतर को स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

P.T.O.

डिजिटल विज्ञापन और आउट ऑफ होम विज्ञापन से आप क्या समझते हैं। स्पष्ट कीजिए।

3. विज्ञापन की भाषा के विविध पक्ष कौन-कौन से हैं, सविस्तार वर्णन कीजिए। (12)

अथवा

विज्ञापन की भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

4. टेलीविजन विज्ञापन के लिए कॉपी लिखते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

रेडियो जिंगल लेखन की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

5. किन्हीं तीन विषयों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए : (9×3=27)

(i) विज्ञापन के प्रभाव

(ii) प्रिंट विज्ञापनों की भाषा

(iii) सोशल मीडिया विज्ञापन

(iv) विज्ञापन पंचलाइन

(v) रेडियो पर प्रसारित हिंदी विज्ञापनों की भाषा

(vi) विज्ञापन माध्यम का चयन

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

E

Sr. No. of Question Paper : 3295

Unique Paper Code : 62055636

Name of the Paper : अस्मितामूलक विमर्श और हिन्दी साहित्य

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi- CBCS-GE**

Semester : VI

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (10×2=20)

(क) बभने के लेखे हम भिखिय न भौगबजौं,
ठकुर के लेखे नहीं लउरी चलाइबि।

P.T.O.

सहुआ के लेखे नहि खंडी - हम जोरबजाँ,
अहिरा के लेखे न कबिन्त हम जोरजाँ,
पवड़ी न बनि के कचहरी में जाइबि।।
अपने पहसनवा के पइसा कमादबजाँ,
घर भर मिलि जुलि बाँटि - चोटि खदबि ।

अथवा

क्या तुम जानते हो
एक स्त्री के समस्त रिश्ते का व्याकरण?
बता सकते हो तुम
एक स्त्री को स्त्री - दृष्टि से देखते
उसके स्त्रीत्व की परिभाषा?
अगर नहीं
तो फिर क्या जानते हो तुम
रसोई और बिस्तर के गणित से परे
एक स्त्री के बारे में...

(ख) अतः रात के समय मुझे टड़वाँ गाँव की एक दुकान से मिट्टी का तेल लाने के लिए भेजा गया। मैं अँगोछे में आधा सेर जौ बांधकर तेल लेने चल पड़ा। ऐसे किसी भी काम के लिए घरवाले हमेशा रात के समय मुझे ही भेजा करते थे, जिसका एकमात्र

कारण यह था कि अपशकुन होने के कारण मेरा चाहे जो भी अनिष्ट हो जावे, किन्तु घर के किसी अन्य व्यक्ति का कुछ न बिगड़े। यहाँ तक कि घर का कोई आदमी बरहलगंज बाजार जाता और लौटते समय रात हो जाती, तो हमेशा मुझे मुर्दहिया के पास भेजकर बाजार गए आदमी को जोर से चिल्लाकर पुकारने को कहा जाता था। मुर्दहिया के सन्नाटे से लगाई गई मेरी आवाज बहुत दूर तक जाती, जिसे सुनकर बाजार से लौटता हुआ आदमी मेरी ही तरह चिल्लाकर कहता : 'आवत हई' ।

अथवा

कैसा अनाथ बचपन था। अम्मा ने कभी मुझे गोद में उठाकर चूमा नहीं। मैं चुपचाप घंटों उनके कमरे के दरवाजे पर खड़ी रहती । शायद अम्मा मुझे भीतर बुला लें। शायद... हाँ, शायद अपनी रजाई में सुला लें। मगर नहीं, एक शाश्वत दूरी बनी रही हमेशा हम दोनों के बीच। अम्मा मेरी बातों को समझ नहीं पाती थी।

2. दलित विमर्श की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए फुले और अम्बेडकर की विचारधारा का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।

अथवा

जल, जंगल और जमीन की समस्याओं के सन्दर्भ में आदिवासी जीवन की जटिलताओं का विश्लेषण कीजिए। (10)

3. ओमप्रकाश वाल्मीकि की 'सलाम' कहानी की सम्वेदना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

जयप्रकाश कर्दम की कहानी 'मोहरे' के प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए। (10)

4. अनामिका की कविता 'स्त्रियाँ' के भाव - सौन्दर्य का उद्घाटन कीजिए।

अथवा

हीरा डोम की 'अछूत की शिकायत' कविता हिन्दी दलित साहित्य का प्रस्थान-बिन्दु है- इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं? (10)

5. दलित आत्मकथा-लेखन की परम्परा में 'मुर्दहिया' के स्थान का निरूपण कीजिए।

अथवा

प्रभा खेतान की रचना 'अन्या से अनन्या तक' की अन्तर्वस्तु का विवेचन कीजिए। (10)

6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए। (7+8=15)

(i) 'धूणी तपे तीर' का महत्त्व

(ii) आदिवासियों के सम्मुख उपस्थित चुनौतियाँ

(iii) 'सोनवा का पिंजरा' में चित्रित यथार्थ

(iv) निर्मला पुतुल

(1000)

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3896 E

Unique Paper Code : 12057611

Name of the Paper : अवधारणात्मक साहित्यिक पद

Name of the Course : B.A. (HONS.) HINDI – DSE

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. शब्द शक्ति को परिभाषित करते हुए लक्षणा शब्द शक्ति को सोदाहरण समझाइए। (12)

अथवा

अलंकार के स्वरूप पर विचार करते हुए उपमा अलंकार को स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

2. साधारणीकरण के सिद्धांत पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

महाकाव्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

3. यथार्थवाद की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए जादुई यथार्थवाद और यथार्थवाद में अन्तर बताइए। (12)

अथवा

स्वच्छंदतावाद का स्वरूप स्पष्ट करते हुए उसकी विशेषताएं बताइए।

4. कहानी की परिभाषा देते हुए उसके तत्वों का विश्लेषण कीजिए। (12)

अथवा

आधुनिकता की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए: (9×3=27)

(क) व्यंजना

(ख) रस-निष्पत्ति

(ग) उत्तर संरचनावाद

(घ) विरेचन

(ङ) प्रतीक

(च) नाटक

(1000)

(2)

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No.....

C

Sr. No. of Question Paper : 3509

Unique Paper Code : 12051601

Name of the Paper : हिंदी आलोचना

Name of the Course : B.A. (H) HINDI - CBCS

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों के संदर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए :- (10 + 10 + 10)

P.T.O.

(क) भावों की छानबीन करने पर मंगल का विधान करने
भाव ठहरते हैं- करुणा और प्रेम। करुणा की गति र
ओर होती है और प्रेम की रंजन ओर। लोक में प्रथम साध्य
है। रंजन का अवसर उसके पीछे आता है। अतः साधना
या प्रयत्न पक्ष को लेकर चलने वाले काव्यों का बीज भाव क
ही ठहरती है। इसी से शायद अपने दो नाटकों में रामचरित
लेकर चलने वाले महाकवि भवभूति ने 'करुण' को ही एकम
रस कह दिया। रामायण का बीज भाव करुणा है, जिसका संके
क्रौंच को मारने वाले निषाद के प्रति वाल्मीकि के मुँह से निक
वचन द्वारा आरंभ में ही मिलता है।

अथवा

हमें सुंदरता की कसौटी बदलनी होगी। अभी तक यह कसौटी
अमीरी और विलासिता के ढंग की थी। हमारा कलाकार अमीरों
का पल्ला पकड़े रहना चाहता था, उन्हीं की कद्रदानी पर उसका

अस्तित्व अवलंबित था और उन्हीं के सुख-दुःख, आशा-निराश
प्रतियोगिता और प्रतिद्वंद्विता की व्याख्या करना का उद्देश्य था।
उसकी निगाह अंतःपुर और बंगलों की ओर उठती थी। झोंपड़े
और खंडहर उसके ध्यान के अधिकारी न थे। उन्हें वह मनुष्यता
की परिधि से बाहर समझता था। कभी इनकी चर्चा करता भी
था, पर इनका मजाक उड़ाने के लिए, ग्रामवासी की देहाती
वेश-भूषा और तौर-तरीकों पर हँसने के लिए।

(ख) तुलसी के समय का सामाजिक यथार्थ क्या है? उनके समय का
सामाजिक यथार्थ जर्जर होती हुई सामंती व्यवस्था है। तुलसी इस
व्यवस्था के रक्षक नहीं हैं और सामंतों के उत्पीड़न के विरुद्ध
उनकी सहानुभूति साधारण जनों और स्त्रियों के साथ है। उन्होंने
स्वयं इस उत्पीड़न का अनुभव किया था। इसलिए यह धारणा
कि तुलसी नारी की पराधीनता के हामी थे, ब्राह्मणों के खिलाफ
शूद्रों की बगावत में वह ब्राह्मणों के साथ थे, उनके समूचे साहित्य

को अध्ययन से यह साबित नहीं होती। तुलसी की
समाज के लिए अफीम नहीं थी। वह जन-साधारण का
साधन थी। भक्त तुलसीदास मूलत: मानववादी हैं और उ
साहित्य की महत्ता वास्तविक सामाजिक संबंधों का
करने में है।

अथवा

प्रयोग कोई वाद नहीं है। हम वादी नहीं रहे, नहीं है। न प्रयो
अपने आप में इष्ट या साध्य है। ठीक इसी तरह कविता व
भी कोई वाद नहीं है; कविता भी अपने आप में इष्ट या साध्य
नहीं है। अत: हमें 'प्रयोगवादी' कहना उतना ही सार्थक या
निरर्थक है जितना हमें 'कितावादी' कहना। क्योंकि यह आग्रह
तो हमारा है कि जिस प्रकार कविता रूपी माध्यम को बरतते हुए
आत्माभिव्यक्ति चाहने वाले कवि को अधिकार है कि उस माध्यम

का अपनी आवश्यकता के अनुरूप श्रेष्ठ उपयोग करे, उसी प्रकार
आत्म-सत्य के अन्वेषी कवि को, अन्वेषण के प्रयोग-रूपी
माध्यम का उपयोग करते समय उस माध्यम की विशेषताओं
को परखने का भी अधिकार है। इतना ही नहीं, बिना माध्यम
की विशेषता, उसकी शक्ति और उसकी सीमा को परखे
और आत्मसात किए उस माध्यम का श्रेष्ठ उपयोग हो ही नहीं
सकता।

(ग) परिष्कृत रुचि, आज की परिस्थिति में, सर्वसामान्य नहीं है। आज
रुचि को विकृत करने के साधन अनेक हैं और निरंतर उनका
प्रसार ही होता जा रहा है। सस्ती पत्रिकाएं, सामान्य से भी
सामान्यतर रुचि के लेखक, 'अपील' का आग्रह। ये सारी चीजें
रुचि परिष्कार में बाधक हैं। किंतु इन कुरुचिपूर्ण साधनों के
विकास के साथ ही इनके प्रति चेतना का अनुपात भी बढ़ता
जा रहा है। आज पाठक अच्छी कहानियों की मांग ज्यादा करता

दिख पड़ता है। वह सस्ते स्तरों की कहानी को या तो
से बाहर कर देता है या उनको समाजघाती होने पर उनकी
आलोचना करता है। आज के हिंदी कथा साहित्य के पाठक
रुचि पर संदेह करना एक प्रकार की असावधानी (शायद साय
बरती गई!) कही जाएगी।

अथवा

साहित्य के रूप केवल रूप्य नहीं है बल्कि जीवन को समझने के भिन्न-भिन्न माध्यम है। एक माध्यम जब चुकता दिखाई पड़ता है, तो दूसरे माध्यम का निर्माण किया जाता है। अपनी महान जययात्रा में सत्य-सौंदर्य-दृष्टा मनुष्य ने इसी तरह समय-समय पर नये नये कलारूपों की सृष्टि की ताकि वह नित्य विकासशील वास्तविकता को अधिक से अधिक समझ और समेट सके। हमारी इसी ऐतिहासिक आवश्यकता से एक समय कहानी भी उत्पन्न हुई और अपने रूप सौंदर्य के द्वारा इसने हमारे

सत्य-सौंदर्य-बोध को भी विकसित किया। कहानी की इसी ऐतिहासिक भूमिका की मांग है कि वर्तमान परिस्थिति में उसकी सार्थकता की परीक्षा व्यापक संदर्भ में की जाय।

2. आचार्य रामचंद्र शुक्ल की आलोचना शैली पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

हिंदी आलोचना के विकास पर प्रकाश डालिए।

3. 'तुलसी साहित्य में सामंत-विरोधी मूल्य' में अभिव्यक्त रामविलास शर्मा के विचारों का मूल्यांकन कीजिए। (15)

अथवा

'कला के तीन क्षण' में निहित मुक्तिबोध के विचारों को स्पष्ट कीजिए।

4. 'शमशेर की काव्यानुभूति की बनावट' लेख पर समीक्षात्मक टिप्पणी लिखिए। (15)

अथवा

'रेणु: समय मानवीय दृष्टि' शीर्षक पाठ का प्रतिपाद्य लिखिए।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

F

Sr. No. of Question Paper : 2103

Unique Paper Code : 2051001002

Name of the Paper : Hindi Aupcharik Lekhan (Hindi-B)

Name of the Course : **AEC**

Semester : II

Duration : 2 Hours

Maximum Marks : 60

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. कार्यालयी हिंदी का अर्थ बताते हुए उसकी विशेषताएं लिखिए । (12)

अथवा

व्यावसायिक की उपयोगिता को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए ।

2. कार्यालयी पत्र का स्वरूप बतलाते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डालिए । (12)

P.T.O.

अथवा

टिप्पण की परिभाषा देते हुए अच्छे टिप्पण की विशेषताएँ लिखिए।

3. किसी सरकारी विद्यालय शिक्षक के पद हेतु स्ववृत्त तैयार कीजिए। (12)

अथवा

सूचना का अधिकार अधिनियम की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

4. सरकारी पत्रों का उल्लेख करते हुए उसके प्रमुख अंगो का सामान्य परिचय लिखिए। (12)

अथवा

प्रेस विज्ञप्ति किसे कहते हैं? प्रेस विज्ञप्ति का एक प्रारूप तैयार कीजिए। (6,6)

5. किन्हीं दो विषयों पर टिप्पणी लिखिए :

(i) विज्ञापन की विशेषताएँ

(ii) प्रतिवेदन

(iii) कार्यालय की आचार संहिता

(iv) अर्ध-सरकारी पत्र

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

C

Sr. No. of Question Paper : 3660

Unique Paper Code : 12051602

Name of the Paper : हिन्दी निबंध और अन्य गद्य विधाएँ

Name of the Course : B.A. (H) HINDI

Semester : VI

समय : 3 घण्टे

पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8+7=15)

(क) मनुष्य व्यक्ति के चरित्र का विचार कई एक रीति से हो सकता है। और जिस रीति पर आरूढ़ हो इसकी मीमांसा कीजिये उस ढंग से वैसे विचार होंगे। चाहे मनुष्य के धर्म अथवा सच्चरित्र संबंधी गुणों का विचार कीजिए या चाहे इसी के निकट का कोई प्रश्न उठाकर उस पर कुछ शंका समाधान कीजिये अर्थात्

P.T.O.

सच्चरित्र से सामाजिक क्या लाभ है इन सब बातों के विचार से हमको इस लेख में कुछ प्रयोजन नहीं है किन्तु हमको यहाँ उस मुख्य बात से प्रयोजन है जो इस प्रकार की मीमांसा के भी पूर्व विचार में आनी चाहिये और वह यह बात है कि जातियों का अनूठापन इस देश के इतिहास का फल है।

अथवा

अतीत की स्मृति में मनुष्य के लिए स्वाभाविक आकर्षण है। अर्थ-परायण लोग कहा करें कि 'गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या फायदा' पर हृदय नहीं मानता; बार-बार अतीत की ओर जाया करता है। अपनी यह बुरी आदत नहीं छोड़ता। इसमें कुछ रहस्य अवश्य है। हृदय के लिए अतीत एक मुक्ति लोक है जहाँ वह अनेक प्रकार के बंधनों से छूटा रहता है और अपने शुद्ध रूप में विचरता है। वर्तमान हमें अंधा बनाये रहता है; अतीत बीच-बीच में हमारी आँखें खोलता रहता है।

(ख) भारत वर्ष बहुत बड़ा देश है। इसका इतिहास बहुत पुराना है। इस इतिहास का जितना अंश जाना जा सकता उसकी अपेक्षा जितना नहीं जाना जा सकता, वह और भी पुराना और महत्त्वपूर्ण है। न जाने किस अज्ञात काल से नाना जातियाँ आ-आकर इस देश में बसती रही है और इसके साधन को नाना भाव से मोड़ती रही हैं, नये रूप देती रही हैं और समृद्ध करती रही हैं। इस देश का सबसे पुराना उपलब्ध साहित्य आर्यों का है।

अथवा

अनुसरण मनुष्य की प्रकृति है। बालक प्रायः आरम्भ में सब कुछ अनुसरण से ही सीखता है, तत्पश्चात् अपने अनुभव के साँचे में ढालकर उसे अधिक से अधिक पूर्ण करने के प्रयास करता है परन्तु अनुभव के आधार से हीन अनुसरण सिखाए हुए पशु के अन्धानुसरण के समान है जो जीवन के गौरव को समूल नष्ट कर और मनुष्य को दयनीय बनाकर पशु की श्रेणी में बैठने के लिए बाध्य कर देता है।

2. 'मजदूरी' और 'प्रेम' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

अथवा

'अतीत की स्मृति' निबंध की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

3. 'तुम चंदन हम पानी' निबंध का मूल कथ्य स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'हमारी शृंखला की कड़ियाँ' का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. 'अपनी खबर' की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'नए संघर्ष' का सार लिखिए।

5. 'अज्ञेय के साथ' की मूल संवेदना लिखिए। (15)

अथवा

सुभान खाँ की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3194 **E**

Unique Paper Code : 62057632

Name of the Paper : Sahityachintan

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi CBCS-DSE**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'साहित्य समाज को दिशा देता है' इस कथन की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

साहित्य अध्ययन की प्रमुख दृष्टियों का परिचय दीजिए।

2. रस के भेदों का संक्षिप्त परिचय दीजिए। (15)

P.T.O.

अथवा

रस के अंगों का निरुपण कीजिए।

3. लक्षणा शब्द-शक्ति की परिभाषा देते हुए उसके महत्व पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

काव्य में अलंकारों का महत्व रेखांकित कीजिए।

4. काव्य में छंदों की क्या भूमिका है? (15)

अथवा

साहित्य में लय के महत्व को रेखांकित कीजिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए :- (8,7)

(i) बिम्ब

(ii) अभिधा शब्द-शक्ति

(iii) सहृदय की अवधारणा

(iv) प्रतीक

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No.....

E

Sr. No. of Question Paper : 3345

Unique Paper Code : 62057632

Name of the Paper : Sahityachintan

Name of the Course : **BA (Prog.) Hindi CBCS – DSE**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. क्या सामाजिक बदलाव में साहित्य की कोई भूमिका है?- इस प्रश्न पर विचार करते हुए साहित्य की उपादेयता पर निबंध लिखिए। (15)

अथवा

साहित्य अध्ययन की अस्तित्ववादी दृष्टि की विवेचना कीजिए।

P.T.O.

2. रस-निष्पत्ति का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

करुण रस की परिभाषा और पहचान बताते हुए उदाहरण दीजिए।

3. अभिधा शब्द-शक्ति का सोदाहरण परिचय देते हुए इसके महत्व पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

यमक और श्लेष अलंकार का सोदाहरण परिचय देते हुए अंतर स्पष्ट कीजिए।

4. लय और तुक का काव्य-सौष्ठव में क्या योगदान है? (15)

अथवा

साहित्य में छंद की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

5. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए - (8,7)

(i) लक्षणा शब्द शक्ति

(ii) काव्य-शिल्प के रूप में फैंटेसी

(iii) रस का स्वरूप

(iv) नियक

(2000)